Teacher's Manual

Carvaan

व्याकरण

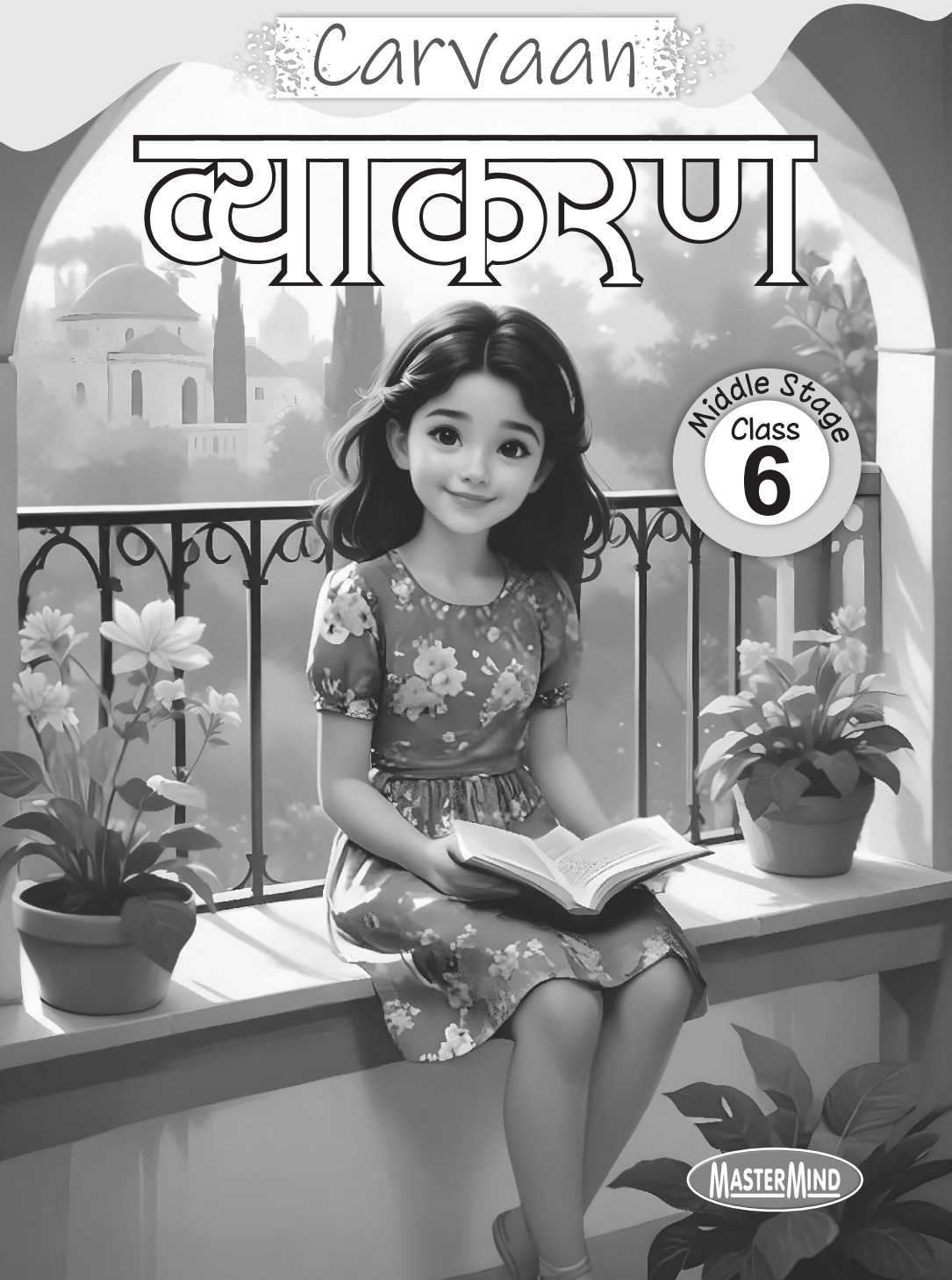

व्याकरण भाग-6

अध्याय 1
भाषा, लिपि और व्याकरण

आओ कुछ बताएँ

- (क) स्वयं करें।
  (ख) हिंदी दिवस 14 सितम्बर को मनाया जाता है।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (iii)

उ०2.

(क) पंजाबी	(i) फारसी
(ख) हिंदी	(ii) गुरुमुखी
(ग) अंग्रेजी	(iii) मौखिक भाषा
(घ) भाषा का प्राचीनतम रूप	(iv) देवनागरी
(ङ) उर्दू	(v) रोमन

उ०1. (क) हिंदी (ख) लिपि (ग) देवनागरी
(घ) मौखिक (ङ) साधन

क्रियाकलाप

-

ने	ची	नी	त	मि	ल
पा	गु	ज	रा	ती	ज
ली	फ्रें	म	रा	ठी	र्म
र	च	अं	ग्रे	ज़ी	न
क	हिं	दी	पं	जा	बी

अध्याय 2
वर्ण-विचार

आओ कुछ बताएँ

- (क) प्रातः, अंततः
  (ख) स्वर का उच्चारण करते हुए किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती जबकि व्यंजन का उच्चारण करने के लिए स्वर की सहायता लेनी पड़ती है, तथा ध्वनि कुछ रूककर निकलती है।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (ii) (ख) (iii)

उ०1. (ख) क्ष = क्षय, क्षत्रिय (ग) त्र = त्रिशूल, त्रिलोक
(घ) ट्ठ = मट्ठा, गट्ठा (ङ) ध्य = ध्यान, ध्यानपूर्वक
(च) स्न = स्नान, स्नानागार

उ०3. (क) 11, 33 (ख) वर्ण (ग) पाई
(घ) संयुक्त

उ०4.

अनुस्वार	अनुनासिक
ठंड	चाँद
चंदन	गाँव
बंदर	दाँत
कंधा	आँख

उ०5. (क) वर्ण– भाषा की वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके ओर टुकड़े न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है। वर्ण के दो प्रकार होते हैं–
(i) स्वर (ii) व्यंजन

(ख) जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है, वे व्यंजन कहलाते हैं। व्यंजन के भेद तीन होते हैं। इसका एक भेद– स्पर्श व्यंजन है। इसमें व्यंजनों का उच्चारण कंठ, होंठ, जिह्वा आदि के स्पर्श द्वारा होता है।

(ग) दो व्यंजनों के ऐसे मेल को जिससे बने व्यंजन में उन व्यंजनों की पहचान बिल्कुल समाप्त हो जाए, संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं,

इनकी संख्या 4 होती हैं। ये हैं–

क् + ष = क्ष कक्षा, रक्षा, क्षत्रिय

ज् + ञ = ज्ञ यज्ञ, ज्ञानी, अज्ञात

त् + र = त्र, आत्रेय, त्रिशूल,

श् + र = श्र श्रम, आश्रम, श्रमिक

(घ) किसी भी शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। जैसे–

राजा = र् + आ + ज् + आ

हिरन = ह् + इ + र् + अ + न् + अ

धृतराष्ट्र = ध् + ऋ + त् + अ + र् + आ + ष् + ट् + र् + अ

क्रियाकलाप

- (क) गुजराती – ग्+उ+ज्+अ+र+आ+त्+ई
  (ख) समाधान – स्+अ+म्+आ+ध्+आ+न्+अ
  (ग) मानक – म+आ+न्+अ+क+अ
  (घ) नाटक – न+आ+ट्+अ+क+अ
  (ङ) मलयालम – म+अ+ल+अ+य+आ+ल्+अ+म्+अ

अध्याय 3
शब्द-विचार

आओ कुछ बताएँ

उ०1. (क) ये तुर्की भाषा के शब्द हैं।
(ख) कर्पूर का तद्भव– कपूर है।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०2. (क) अविकारी (ख) वर्णों (ग) वाक्यों
(घ) शब्दों

उ०3. (क) वर्णों के मेल से बनाई गई सार्थक इकाई ही शब्द कहलाती है। शब्द स्वतंत्र इकाई होते हैं।

(ख) हिंदी का शब्द-भंडार बहुत विशाल है। इन्हें चार वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

शब्दों का वर्गीकरण

1	2	3	4
उत्पत्ति के आधार पर	रचना के आधार पर	अर्थ के आधार पर	प्रयोग के आधार पर
(क) तत्सम शब्द (ख) तद्भव शब्द (ग) देशज शब्द (घ) विदेशज शब्द	(क) रूढ़ शब्द (ख) यौगिक शब्द (ग) योगरूढ़ शब्द	(क) सार्थक शब्द (ख) निरर्थक शब्द	(क) विकारी शब्द (ख) अविकारी शब्द

(ग) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को चार भागों में बाँटा गया है–
(i) तत्सम शब्द (ii) तद्भव शब्द (iii) देशज शब्द
(iv) विदेशज शब्द।

(घ) तत्सम तथा तद्भव शब्दों में अंतर–
तत्सम शब्दों का उच्चारण और वर्तनी संस्कृत के अनुसार होते हैं जबकि तद्भव शब्दों का उच्चारण एवं वर्तनी हिंदी के अनुसार होते हैं। तत्सम शब्द संस्कृत से ज्यों के त्यों लिए जाते हैं, जबकि

तद्भव शब्द संस्कृत से हिंदी में आने के बाद उनका रूप बदल जाता है।

क्रियाकलाप

- 1. टमाटर
  2. रविवार
  3. कपूर
  4. विचार
  5. कक्षा

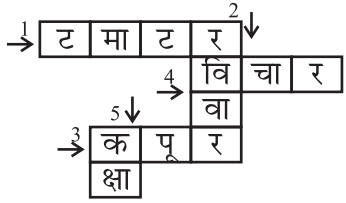

अध्याय 4
संधि

आओ कुछ बताएँ

- (क) पर्वत+आरोही हिम+आलय (दीर्घ स्वर संधि)

आओ कुछ करें

उ०1. (क) सूर्योदय (ख) विद्यालय (ग) महौषध
(घ) भवन (ङ) पराधीन (च) शास्त्रार्थ

उ०2. (क) सु+आगत (ख) उत्+ ज्वल

उ०3. (क)

(ख) संधि तीन प्रकार की होती हैं–

(i) स्वर संधि– जैसे, सदा+एव = सदैव

(ii) व्यंजन संधि– जैसे, उत्+ज्वल =उज्जवल

(iii) विसर्ग संधि– जैसे, नि:+चय = निश्चय

(ग) जब दो स्वरों के परस्पर मिलने से विकार उत्पन्न होता है, तो उसे स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि के निम्नलिखित पाँच भेद होते हैं–

(i) दीर्घ संधि (ii) गुण संधि

(iii) वृद्धि संधि (iv) यण संधि

(v) अयादि संधि

(घ) संधि किये हुये वर्णों को अलग करके पहले वाली स्थिति में लाना संधि-विच्छेद कहलाता है। जैसे– परीक्षा+अर्थी = परीक्षार्थी

क्रियाकलाप

		संधि	संधि का नाम
•	(क) नै +अक	नायक	अयादि संधि
	(ख) वसंत+उत्सव	वसंतोत्सव	गुण संधि
	(ग) राम +अवतार	रामावतार	दीर्घ संधि
	(घ) रेखा +अंकित	रेखांकित	दीर्घ संधि

अध्याय 5

समास

आओ कुछ बताएँ

- (क) समास

  (ख) सामासिक पद के दो भाग होते हैं– (i) पूर्वपद (ii) उत्तरपद

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (i) (ख) (i) (ग) (ii)

	समस्त पद	समास	समस्त पद
उ०2.	(क) यथाशक्ति	(i) बहुव्रीहि	(घ) प्रतिदिन
	(ख) गजानन	(ii) अव्ययीभाव	(ङ) सुख-दुख
	(ग) दिन-रात	(iii) द्वंद्व	(च) दशानन

उ०3. (क) समास का अर्थ है– छोटा करना या संक्षिप्त करना। दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक कर देना समास कहलाता है। समास के बाद बने संयुक्त शब्द को समस्त पद या सामासिक पद कहते हैं। ऊपर दिए गए राधा-कृष्ण, देवालय तथा गजानन समस्त पद हैं। दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनने वाले सार्थक शब्द की प्रक्रिया समास कहलाती है।

(ख) समास के निम्नलिखित छः भेद होते हैंM

(i) अव्ययीभाव समास

(ii) तत्पुरुष समास

(iii) कर्मधारय समास

(iv) द्विगु समास

(v) द्वंद्व समास

(vi) बहुव्रीहि समास।

(ग) समास रचना में दो शब्द अथवा दो पद होते हैं– पहले पद को पूर्व पद तथा दूसरे पद को उत्तर पद कहा जाता है।

जैसे– गंगाजल में 'गंगा' पूर्वपद है तथा 'जल' उत्तरपद है।

(घ) समास–विग्रह का अर्थ है, समस्त पदों को अलग–अलग करना।

समस्त–पद	विग्रह
घुड़सवार	घोड़े पर सवार

क्रियाकलाप

	शब्द	समास का नाम
(क)	आजीवन	अव्ययीभाव समास
(ख)	गंगाजल	तत्पुरुष समास (संबंध तत्पुरुष समास)
(ग)	शरणागत	तत्पुरुष समास (कर्म तत्पुरुष समास)
(घ)	जन्म–मरण	द्वंद्व समास
(ङ)	तिरंगा	द्विगु समास

अध्याय 6

उपसर्ग : समास

आओ कुछ बताएँ

उ०1. (क) समास का पहला पद पूर्वपद तथा दूसरा पद उत्तरपद कहलाता है।

(ख) तत्पुरुष समास

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (i) (ख) (i) तथा (ii) (ग) (ii)

उ०2.

	उपसर्ग	मूल शब्द	
(क)	पर	योग	– सुयोग्य
(ख)	सु	देश	– परदेश
(ग)	सत्	कर्म	– दुष्कर्म
(घ)	दुष्	मार्ग	– दुष्कर्म

उ०4. (क) परिवर्तन (ख) अंश (ग) नवीन

(घ) तीन

उ०5. (क) उपसर्ग दो शब्दों– 'उप' तथा 'सर्ग' से मिलकर बना है। इनमें जो शब्दांश शब्दों के पूर्व जुड़कर उनके में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे– अभिनेता, कमजोर, दुबला। यहाँ पर आए 'अभि', 'कम' तथा 'दु' शब्द नहीं है। ये शब्दों के अंश हैं। इनका अलग से प्रयोग नहीं हो सकता। ऐसे शब्दांश शब्दों के पहले जब मूल शब्दों के पहले जुड़ते हैं, तो नए शब्दों का निर्माण करते हैं। इन्हें उपसर्ग कहते हैं।

(ख) उपसर्ग को तीन भागों में बाँटा गया है। इनके नाम निम्न प्रकार हैं–

(i) संस्कृत के उपसर्ग (ii) उर्दू–फारसी उपसर्ग

(iii) हिंदी के तद्भव उपसर्ग।

क्रियाकलाप

• (ख) अनु, वि — राग — अनुराग, विराग

(ख) स्व, पर — तंत्र — स्वतंत्र, परतंत्र

अध्याय 7
प्रत्यय

आओ कुछ बताएँ

- (क) पलटन – टन नाइन – इन घेरा – आ
  (ख) इक – वार्षिक, दैनिक कार – कलाकार, पत्रकार

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iii)

उ०2. (क) धोखेबाजी (ख) परीक्षाफल
(ग) क्रमवार (घ) तेजस्वी
(ङ) बुद्धिमान (च) पढ़ना
(छ) खजानची (ज) चमकीला
(झ) जमानत (ञ) मोटापा

उ०3.

मि	झू	ला	चि	च	कि
ला	खा	प	त्र	तु	ला
क	क	ढ़ा	का	रा	सो
र	र	ई	र	ई	क
ज	क	ला	का	र	र
ल	लि	खा	ई	मै	ला

आ	कर	कार	आई
मिला	खाकर	चित्रकार	चतुराई
झूला	सोकर	कलाकार	लिखाई
किला	लाकर		पढ़ाई
मैला	मिलाकर		खाई
लिखा			
पढ़ा			

उ०4. (क) जो शब्दांश शब्दों के अंत में जुड़कर उनके कार्य में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे– खेल में 'ना' प्रत्यय लगाने से 'खेलना' शब्द का निर्माण होता है।

(ख) प्रत्यय के निम्नलिखित दो भेद होते हैं–

(i) कृदंत प्रत्यय– जो शब्दांश क्रिया या धातु के अंत में जुड़ते हैं, वे कृदंत प्रत्यय कहलाते हैं।

(ii) तद्धित प्रत्यय– जो शब्दांश क्रिया की धातु को जोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा अव्यय शब्दों के अंत में जुड़ते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

(ग) उपसर्ग तथा प्रत्यय में अंतर–उपसर्ग ऐसे अंश होते हैं जो शब्दांश शब्दों से पहले जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं जैसे– ज्ञानी में उपसर्ग 'अ' लगाने पर 'अज्ञानी' हो जाता है। जबकि प्रत्यय शब्द के अंत में जुड़कर उसका अर्थ परिवर्तन कर देता है जैसे– मनुष्य में 'ता' प्रत्यय लगाने पर 'मनुष्यता' शब्द बनता है।

क्रियाकलाप

उ०1. (क) लिखावट (ख) गतिमान

(ग) क्रोधित (घ) जापानी

(ङ) चिकनाहट (च) जमानत

अध्याय 8
संज्ञा

आओ कुछ बताएँ

- (क) (i) बुनना – बुनाई (ii) सुनना – सुनाई
  (ख) (i) निकट – निकटता (ii) शीर्ष – शीघ्रता

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (iii) (ख) (i)

उ०2. (क) अवस्था (ख) तीन
(ग) वस्तु, व्यक्तिवाचक (घ) महसूस

उ०3. (क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव या अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे– राम, पुस्तक, दिल्ली, मिठास तथा बचपन।

(ख) संज्ञा के तीन भेद होते हैं–
(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा– जैसे- रोहित, मेरठ
(ii) जातिवाचक संज्ञा– जैसे- श्रमिक पशु
(iii) भाववाचक संज्ञा– जैसे- नीचा, चतुरता

(ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा– जो शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी अथवा स्थान का बोध कराते हैं, व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे- कुमुद, रामपुर, गंगा आदि।

(घ) भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण– इन संज्ञाओं का निर्माण पाँच प्रकार से होता है।
(i) जातिवाचक संज्ञा से
(ii) सर्वनाम के प्रयोग से
(iii) विशेषणों के द्वारा
(iv) क्रियाओं से
(v) क्रिया-विशेषण से

अध्याय 9
लिंग

आओ कुछ बताएँ

- (क) लिंग द्वारा विकार– जैसे- लड़का – लड़की
  (ख) कारक द्वारा विकार– लड़की ने पाठ याद किया।
  लड़के को पाठ याद कराया गया।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (iii) (ख) (iv)

उ०2. (क) रानी (ख) लेखिका (ग) मोरनी
(घ) पुत्री

उ०3. (क) संज्ञा के विकार, लिंग, वचन और कारक के कारण होते हैं। भाषा में कुछ ऐसे संज्ञा शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिनमें प्रसंग के अनुसार परिवर्तन हो जाता है। ऐसे संज्ञा शब्दों को संज्ञा के विकार (परिवर्तन) कहते हैं।

(ख) शब्द के जिस रूप से यह पता चलता है कि वह शब्द स्त्री जाति का है अथवा पुरुष जाति का, उसे लिंग कहते हैं।
जैसे- छात्र (पुल्लिंग) छात्रा (स्त्रीलिंग)

(ग) हिंदी भाषा में लिंग के दो भेद माने गए हैं–

(i) पुल्लिंग– जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं, जैसे– पुत्र, बैल, पिता, शेर आदि।

(ii) स्त्रीलिंग– जिस शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं, जैसे- पुत्री, गाय, माता, शेरनी आदि।

क्रियाकलाप

-

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग		पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
1.	लुहार	लुहारिन	4.	देव	देवी
2.	बैल	गाय	5.	बुद्धिमान	बुद्धिमती
3.	डिब्बा	डिबिया	6.	ठाकुर	ठकुराइन
7.	नट	नटनी	8.	पूज्य	पूज्या
9.	वीर	वीरांगना			

अध्याय 10
संज्ञा के विकार : वचन

आओ कुछ बताएँ

- (क) आकाश, पानी, घी।
  (ख) आँसू, होश, बाल।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (i) (ख) (ii)

उ०2. (क) सभी तोते उड़ गए।
(ख) हॉल में दस दरवाजे हैं।
(ग) एक वर्ष में बारह मास होते हैं।
(घ) कारखाने की मशीन खराब हो गई है।
(ङ) आकाश में सूर्य चमक रहा है।

उ०3. (क) धोबी कपड़ा धो रहा है।
(ख) नदियों का पानी चढ़ रहा है।
(ग) पेड़ से पत्ते गिर रहे हैं।
(घ) अध्यापक बच्चे को पढ़ा रहा है।
(ङ) लड़का पढ़ रहा है।

उ०4. (क) सामान्य भाषा में 'वचन' शब्द का प्रयोग किसी के द्वारा कहे गए शब्दों के लिए किया जाता है, किंतु हिंदी व्याकरण में वचन का प्रयोग संख्या का बोध कराने के लिए होता है। उदाहरण– पंख, साड़ी (एकवचन), पंखे, साड़ियाँ (बहुवचन)।

(ख) हिंदी भाषा में वचन के दो भेद होते हैं–

(i) एकवचन– शब्द के जिस रूप से एक प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे– सब्जी, चिड़िया, लड़का, महिला।

(ii) बहुवचन– शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों वस्तुओं या स्थानों का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे– सब्जियाँ, चिड़ियाँ, लड़के, महिलाएँ।

(ग) वचन की पहचान मुख्य रूप से दो प्रकार से की जा सकती है–

(i) संज्ञा या सर्वनाम शब्द द्वारा– वचन की पहचान संज्ञा या सर्वनाम शब्द द्वारा की जा सकती है। जैसे–

संज्ञा द्वारा– लड़का खेल रहा है। (एकवचन)
लड़के खेल रहे हैं। (बहुवचन)

सर्वनाम द्वारा– वह गा रहा है। (एकवचन)
वे गा रहे हैं। (बहुवचन)

(ii) क्रिया पद द्वारा–

क्रिया पद में परिवर्तन करके भी एकवचन से बहुवचन बनाए जा सकते हैं। जैसे–

मुनि जा रहा है। (एकवचन) मुनि जा रहे हैं। (बहुवचन)।

(घ) शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध होता है, वह बहुवचन कहलाता है; जैसे– मालाएँ, लड़कियाँ, युवा वर्ग आदि।

अध्याय 11
कारक

आओ कुछ बताएँ

- (क) कर्म कारक में क्रिया के प्रभाव का अभाव होता है जबकि संप्रदान कारक में देने का भाव मुख्य होता है।
  (ख) करण कारक में 'से' किसी साधन से काम करने को दर्शाता है जबकि अपादान में 'से' अलग होने का भाव प्रकट होता है।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (ii) (ख) (iv)

उ०2. (क) बंदर पेड़ पर है।
(ख) पर्वतों का सौंदर्य अद्‌वितीय है।
(ग) लड़के दीवार पर कुछ लिख रहे हैं।
(घ) जरा चाकू से खरबूजा काट दीजिए।

उ०3. (क) संज्ञा और सर्वनाम को क्रिया से जोड़ने वाले शब्दों को परसर्ग या कारक कहते हैं। उदाहरण–
(i) तरबूज को चाकू से काटो।
(ii) राजू ने सचिन को पुस्तक दी।

(ख) कारक के भेद– कारक के आठ भेद हैं–

(i) कर्ता कारक	(ii) कर्म कारक
(iii) करण कारक	(iv) संप्रदान कारक
(v) अपादान कारक	(vi) संबंध कारक
(vii) अधिकरण कारक	(viii) संबोधन कारक

(ग) कर्ता कारक– जिस शब्द से कार्य अर्थात् क्रिया के करने वाले का ज्ञान होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। जैसे– पुजारी ने आरती की। यहाँ पर पुजारी 'आरती की' क्रिया को करने वाला है। अत: वह कर्ता कारक है। कुछ स्थानों पर इस कारक के चिह्न 'ने' का प्रयोग नहीं होता है, फिर भी वहाँ कर्ता कारक होता है। जैसे– पुजारी पूजा करता है।

(घ) अपादान कारक में 'से' कारक चिह्न का प्रयोग होता है। जो दो वस्तु को अलग करना प्रकट करता है।
जैसे- रिया के हाथ से मटकी टूट गई।

अध्याय 12
सर्वनाम

आओ कुछ बताएँ

- (क) मध्यम पुरुष सर्वनाम (तू, तुम, आप आदि)
  (ख) अन्य पुरुष सर्वनाम (वह, उसका, उसके आदि)

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (iii) (ख) (ii)

उ०2. (क) जो सर्वनाम शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द का संबंध उसी के उपवाक्य से जोड़ते हैं ये संबंधवाचक कहलाते हैं। वाक्य में वक्ता, श्रोता तथा अन्य व्यक्ति के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, पुरुषवाचक कहलाते हैं।

(ख) निज वाचक सर्वनाम से निजत्व का ज्ञान होता है जबकि प्रश्नवाचक से प्रश्न का बोध होता है।

(ग) निश्चित सर्वनाम किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रयोग होता है जबकि अनिश्चित वस्तु के लिए अनिश्चयवाचक सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

उ०3. (क) सर्वनाम का अर्थ है 'सबके लिए नाम'। अतः संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

(ख) प्रश्नवाचक सर्वनाम– वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से किसी प्रश्न का बोध होता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– तुमने यह पुस्तक क्यों फाड़ी है? इसी प्रकार कब, क्यों, कहाँ, किसने, कैसे इत्यादि प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

(ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम– वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का ज्ञान नहीं होता है, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– देखो, नौकर कुछ चीज लाया है। इसी प्रकार कोई, कुछ, किसी, किन्हीं इत्यादि अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

(घ) पुरुषवाचक सर्वनाम– भाषा में वक्ता, श्रोता तथा अन्य व्यक्ति के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें पुरुषवाचक

सर्वनाम कहा जाता है। जैसे– मैं, तुम, वह आदि। पुरुषवाचक सर्वनाम के भी निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

(i) उत्तम पुरुष– वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से वक्ता अर्थात् कहने वाले का ज्ञान होता है, उन्हें उत्तम पुरुष के सर्वनाम कहते हैं। जैसे– मैं, मेरा, मुझे, हम, हमारे इत्यादि। संस्कृत में इन्हें कहा तो उत्तम पुरुष के सर्वनाम ही जाता है, किंतु इनका स्थान तीसरा होता है, जबकि हिंदी में इनका स्थान प्रथम है।

(ii) मध्यम पुरुष– वाक्य में जिन सर्वमान शब्दों से श्रोता अर्थात् सुनने वाले का ज्ञान होता है, उन्हें मध्यम पुरुष के सर्वनाम कहा जाता है। जैसे- तू, तुम, तुम्हारा, आप, आपका आदि।

(iii) अन्य पुरुष– वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से किसी अन्य व्यक्ति अर्थात् जिसके विषय में कहा जा रहा है, का ज्ञान होता है, उन्हें अन्य पुरुष के सर्वनाम कहते हैं। जैसे– वह, उसका, उसके इत्यादि।

क्रियाकलाप

- 1. निश्चयवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम
  2. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
  3. संबंधवाचक सर्वनाम
  4. निजवाचक सर्वनाम

अध्याय 13
विशेषण

आओ कुछ बताएँ

- (क) जो शब्द वस्तु के गुण के विषय में बताता है, गुणवाचक विशेषण कहलाता है।

  (ख) संख्या का बोध कराने वाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं जबकि परिमाणवाचक विशेषण नाप-तोल संबंधी सूचना देता है।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (iii) (ख) (iii)

उ०2. (क) **निश्चित संख्यावाचक विशेषण–** निश्चित संख्या बताने वाले विशेषण; जैसे– पाँच, अठारह, तीन सौ, दस आदि।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण– अनिश्चित संख्या बताने वाले विशेषण; जैसे– कुछ, कम, अधिक, सभी आदि।

(ख) सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में अंतर–

	सर्वनाम	**सार्वनामिक विशेषण**
(i)	वह खेलती है।	(i) वह लड़की खेलती है।
(ii)	ये खिलौने हैं।	(ii) ये मेरे खिलौने हैं।
(iii)	यह यहाँ रख दो।	(iii) यह पुस्तक यहाँ रख दो।

(ग) (i) **परिमाणवाचक विशेषण–** जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम के परिमाण (नाप-तौल) या मात्रा का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे– पाँच किग्रा, तीन दर्जन, कुछ, थोड़े, बहुत आदि।

परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद होते हैं–

(1) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण– निश्चित परिमाण बताने वाले विशेषण; जैसे– चार लीटर, छः कोड़ी आदि।

(2) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण– अनिश्चित परिमाण बताने वाले विशेषण; जैसे– थोड़े चने, बहुत लोग आदि।

(ii) **संख्यावाचक विशेषण–** जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे– दो, चालीस, तीन सौ पच्चीस, कुछ, कम, सभी आदि।

उ०3. (क) 7 (ख) 3

उ०4. (क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। उदाहरण के लिए– मनीषा ने सुन्दर साड़ी पहनी है। इसमें साड़ी की विशेषता (सुन्दर) बताई गई है।

(ख) विशेषण के चार भेद होते हैं–

(i) गुणवाचक विशेषण

(ii) परिमाणवाचक विशेषण

(iii) संख्यावाचक विशेषण

(iv) सार्वनामिक विशेषण।

क्रियाकलाप

	शब्द	विशेषण		शब्द	विशेषण
1.	घमंड	घमंडी	2.	शर्म	शर्मीला
3.	आदर	आदरणीय	4.	बल	बलवान

अध्याय 14
क्रिया

आओ कुछ बताएँ

- (क) टूटना, बीमार होना
  (ख) हर्ष खाना खाने के लिए घर गया।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (ii) (ख) (i)

उ०2. (क) सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया में अंतर–
सकर्मक तथा अकर्मक क्रियाओं की पहचान कर्म के आधार पर होती है। वाक्य में प्रश्नवाचक शब्द 'क्या' या 'किसको' लगाकर यदि उत्तर आता है, तो क्रिया सकर्मक है और यदि उत्तर नहीं आता है, तो क्रिया अकर्मक है; जैसे–
वैशाली गेंद से खेलती है।
प्रश्न– वैशाली किससे खेलती है? उत्तर– गेंद से
अत: क्रिया सकर्मक है।
प्रश्न– अमिता गाती है।
अमिता क्या गाती है? उत्तर– कोई उत्तर नहीं मिलता?
अत: क्रिया अकर्मक है।

(ख) पूर्वकालिक क्रिया के अंत में 'कर' शब्द लगा होता है; जैसे– खा+कर ⟶ खाकर, गा+कर ⟶ गाकर आदि। जबकि प्रेरणार्थक क्रिया में कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य व्यक्ति को प्रेरित करके उससे कार्य करवाता है। जैसे– आपने यह पेंटिंग कहाँ से मँगवाई है।

उ०3. (क) दूध (ख) सिलाई (ग) आम
(घ) चित्र (ङ) बाजार

उ०4. (क) जिन शब्दों से किसी कार्य के करने, होने की घटना अथवा स्थिति (अवस्था) का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।
उदाहरण– (i) बच्चा कविता पढ़ रहा है।

(ii) वह सो रहा है।

(ख) जिस मूल शब्द से क्रिया बनती है, उसे धातु कहते हैं; जैसे– हँस, गा, रो, खेल, सुन आदि। धातु में 'ना' जोड़ देने से क्रिया का सामान्य रूप बन जाता है जैसे– हँसना, गाना, रोना, खेलना, सुनना आदि।

(ग) **नामधातु क्रिया–** जो क्रिया नाम अर्थात् संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों से प्रत्यय लगाकर बनाई जाती है, उसे नामधातु क्रिया कहते हैं; जैसे– दुल्हन का शर्माना अच्छा लगता है।
यहाँ पर 'शर्म' संज्ञा शब्द से 'आना' प्रत्यय लगाकर 'शर्माना' क्रिया बनाई गई है; अत: 'शर्माना' नामधातु क्रिया है। इसी प्रकार से हथियाना, सकपकाना, लजाना, अपनाना, धकियाना आदि नामधातु क्रियाएँ हैं। ये क्रियाएँ क्रमश: हथिया, सकपका, लाज, अपना, धक्का शब्दों से प्रत्यय लगाकर बनाई गई हैं।

(घ) **द्विकर्मक क्रिया–** जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे– माताजी बालक को फल देती हैं।
यहाँ 'देती हैं' क्रिया के दो कर्म 'बालक' तथा 'फल' हैं; यह द्विकर्मक क्रिया है।

क्रियाकलाप

	वाक्य	पूरक शब्द
1.	सभी खिलाड़ी दु:खी थे।	खिलाड़ी
2.	मोनिका लेखिका है।	लेखिका
3.	रोहन इंजीनियर है।	इंजीनियर
4.	हम छात्र हैं।	छात्र
5.	मैं विद्यार्थी हूँ।	विद्यार्थी

अध्याय 15
काल

आओ कुछ बताएँ

- (क) (i) मेरठ में वर्षा हो रही होगी।
  (ii) वे मॉल घूमने गए होंगे।
  (ख) (i) यदि अनुज पढ़ता तो पास हो जाता।
  (ii) यदि सही समय पर वर्षा होती तो अच्छी फसल होती।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (iii) (ख) (iii)

उ०2. (क) वर्षा हो रही थी।
(ख) शायद बच्चा रो रहा था।
(ग) दिव्या वहाँ गा रही थी।
(घ) हमने नृत्य प्रतियोगिता देखी।

उ०3. (क) भूतकाल (ख) भविष्यत् काल (ग) वर्तमान काल
(घ) वर्तमान काल।

उ०4. (क) क्रिया के होने या करने के समय को काल कहते हैं। काल के तीन भेद हैं–
(i) वर्तमान काल
(ii) भूतकाल काल
(iii) भविष्यत् काल।

(ख) **वर्तमान काल–** क्रिया के जिस रूप से हमें कार्य के चल रहे समय में होने का ज्ञान होता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे– माँ खाना पकाती है।
वर्तमान काल के निम्नलिखित तीन भेद हैं–
(i) सामान्य वर्तमान काल
(ii) अपूर्ण वर्तमान काल
(iii) संदिग्ध वर्तमान काल।

(ग) **भूतकाल–** क्रिया के जिस रूप से हमें कार्य के बीते समय में

सम्पन्न होने का ज्ञान होता है, उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे– माँ ने खाना पकाया था। भूतकाल के छः भेद होते हैं–

(i) सामान्य भूतकाल
(ii) आसन्न भूतकाल
(iii) पूर्ण भूतकाल
(iv) अपूर्ण भूतकाल
(v) संदिग्ध भूतकाल
(vi) हेतुहेतुमद् भूतकाल।

(घ) **भविष्यत् काल–** क्रिया के जिस रूप से हमें किसी कार्य के आने वाले समय में होने का ज्ञान होता है, उसे भविष्य काल कहते हैं; जैसे– अगले माह सर्दी का मौसम आ जायेगा।

(i) सामान्य भविष्यत् काल
(ii) संभाव्य अथवा संदिग्ध भविष्यत् काल
(iii) हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल।

क्रियाकलाप

•

भूतकाल	वर्तमान काल	भविष्यत् काल
दिनेश बाजार गया।	वे बाजार जा रहे हैं।	हम कल दिल्ली जायेंगे।
मोनी ने पत्र लिखा।	छात्र पढ़ रहे हैं।	चित्रा कहानी सुनायेगी।
फूल खिल गए।	रजत फुटबॉल खेल रहा है।	सुमन एक गीत गायेगी।

अध्याय 16
वाच्य

आओ कुछ बताएँ

- (क) (i) सचिन के द्वारा क्रिकेट खेला जाता है।
  (ii) बच्चों के द्वारा गाना गाया जाता है।
  (ख) (i) सोनिया से चला जाता है।
  (ii) दादी जी से बैठा जाता है।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (iii)

उ०2. (क) भाववाच्य (ख) कर्तृवाच्य

उ०3. (क) क्रिया का वह रूप जिससे पता चले कि वाक्य में क्रिया के द्वारा किए गए कर्म का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है, वाच्य कहलाता है।

(ख) **कर्तृवाच्य–** जिन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है, वे कर्तृवाच्य के वाक्य कहलाते हैं; जैसे– सुरेश क्रिकेट खेलता है। यहाँ पर कर्ता सुरेश को अधिक महत्व दिया गया है; क्योंकि कर्म और क्रिया उसी के अनुरूप प्रयुक्त हुई हैं; अतः इस वाक्य में कर्तृवाच्य का प्रयोग हुआ है।

क्रियाकलाप

- (क) मुझसे बैठा नहीं जाता।
  (ख) रोहन से खाना खाया जाता है।
  (ग) छात्रों से शांत नहीं रहा जाता।

अध्याय 17
अव्यय

आओ कुछ बताएँ

- (क) (i) जल्दी-जल्दी घर चलो।
  (ii) दादा जी धीरे-धीरे खाते हैं।
  (ख) (i) विभाजक समुच्चयबोधक अव्यय
  (ii) संयोजक समुच्चयबोधक अव्यय
  (iii) विकल्पसूचक समुच्चयबोधक अव्यय।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (i) (ख) (iii)

उ०2. (क) अविकारी (ख) क्रिया

उ०3. (क) हिंदी भाषा में कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जिनको वाक्य में प्रयोग करते समय लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता है। ऐसे शब्दों को अविकारी या अव्यय शब्द कहते हैं। जैसे–
(i) दिव्या यहाँ रहती है।
(ii) रोहन किधर गया?
(iii) शर्मा जी कहाँ रहते हैं?
(iv) जनक कब आएगा?
उपर्युक्त उदाहरणों में 'यहाँ', 'किधर', 'कहाँ' तथा 'कब' अव्यय हैं, क्योंकि लिंग, वचन, कारक के कारण उनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। प्रत्येक परिस्थिति में अपने मूल रूप में रहने के कारण इन्हें अविकारी शब्द या अव्यय कहते हैं। जिन शब्दों के रूप में कोई विकार या परिवर्तन उत्पन्न नहीं होता, उन्हें अव्यय कहते हैं।

(ख) अविकारी शब्दों के चार भेद हैं, जो निम्नलिखित हैं–
(i) क्रिया विशेषण अव्यय
(ii) संबंधवाचक अव्यय

(iii) समुच्चयबोधक अथवा योजक अव्यय

(iv) विस्मयादिबोधक अव्यय।

(ग) **क्रिया विशेषण अव्यय–** जैसा कि आप पिछली कक्षाओं में पढ़ चुके हैं कि क्रियाओं की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं। इनमें से कुछ क्रिया विशेषण शब्द ऐसे होते हैं, जिनके रूप में किसी भी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता है, ऐसे ही क्रिया विशेषण शब्द क्रिया विशेषण अव्यय कहलाते हैं; जैसे– बालक जोर-जोर से रोता है।

यहाँ पर 'जोर-जोर से' शब्द 'रोता है' क्रिया की विशेषता बता रहा हैं; अत: ये क्रिया विशेषण अव्यय हैं।

(घ) **विस्मयादिबोधक अव्यय–** वाक्य में जिन शब्दों से संबोधन, आश्चर्य, घृणा, दु:ख, क्रोध, लज्जा, हर्ष, विषाद, भय, आशीर्वाद इत्यादि भावों का ज्ञान होता है, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे– शाबाश! तुम जीत गए।

अध्याय 18

वाक्य

आओ कुछ बताएँ

- (क) (i) जाओ (ii) नहाओ
  (ख) (i) सभी लोग अपने-अपने घर चलें।
  (ii) सोनिया दिल्ली नहीं जा सकी, क्योंकि उसकी गाड़ी छूट गई।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (i) (ख) (iii)

उ०2. (क) वाक्य (ख) उद्देश्य
(ग) विस्मयादिबोधक (घ) विधेय

उ०3. (क) शब्दों के सार्थक, क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ढ़ंग से प्रयुक्त समूह को वाक्य कहते हैं। उदाहरण–
(i) रीतिका एक अच्छी लड़की है।
(ii) किसान खेत में परिश्रम करता है।

(ख) वाक्य के सामान्यतय: दो अंक होते हैं इन्हीं को वाक्य रचना के सही आवश्यक तत्व भी कहा जाता है। इनके नाम इस प्रकार हैं–
(i) उद्देश्य (ii) विधेय

(ग) मिश्रित और संयुक्त वाक्यों में एक से अधिक वाक्य समुच्चयबोधकों द्वारा जुड़े होते हैं। वाक्य में जुड़े ऐसे वाक्यों को उपवाक्य कहते हैं; जैसे– सुधीर परिश्रमी है परंतु मंजीत आलसी है।
उपर्युक्त वाक्य में प्रथम वाक्य प्रधान है जबकि दूसरा वाक्य उससे समुच्चयबोधक द्वारा जुड़ा है। यह उपवाक्य कहलाता है।

(घ) उपवाक्य मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं–
(i) आश्रित उपवाक्य (ii) स्वतंत्र उपवाक्य
इसके अतिरिक्त अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं–
(i) विधानवाचक वाक्य (ii) निषेधवाचक वाक्य
(iii) प्रश्नवाचक वाक्य (iv) आज्ञावाचक वाक्य
(v) विस्मयादिबोधक वाक्य (vi) इच्छासूचक वाक्य
(vii) संदेहवाचक वाक्य (viii) संकेतवाचक

क्रियाकलाप

- (क) यदि तुम परिश्रम करोगे तो तुम सफल होंगे।
  (ख) दिव्या कल आई थी परंतु मुझसे नहीं मिली।

अध्याय 19
वाक्य शुद्धि

आओ कुछ बताएँ

• (क) अशुद्धियाँ (ख) आठ

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (iv) (ख) (iv)

उ०2. (क) लड़के पढ़ रहे हैं।
(ख) अध्यापक आ गए हैं।
(ग) रघु ने हस्ताक्षर कर दिए हैं।
(घ) नदी बह रही है।

उ०3. (क) वाक्य में पदक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इसको निम्न प्रकार से समझा जा सकता है–
भजन तुलसीदास रचित सुनाओ। (गलत पदक्रम)
तुलसीदास रचित भजन सुनाओ। (सही पदक्रम)
इस प्रकार शब्दों का उचित क्रम में होने पर ही वाक्य शुद्ध कहलाता है।

(ख) वाक्य में कई प्रकार की अशुद्धियाँ पायी जाती हैं–
(i) वचन संबंधी अशुद्धियाँ
(ii) लिंग संबंधी अशुद्धियाँ
(iii) संज्ञा संबंधी अशुद्धियाँ
(iv) कारक संबंधी अशुद्धियाँ
(v) विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ
(vi) सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ
(vii) पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ
(viii) क्रिया संबंधी अशुद्धियाँ
(ix) क्रिया-विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ

(ग) वाक्य के ऐसे सार्थक पदों का समूह, जो विचारों को पूर्ण रूप से व्यक्त करता है, वाक्य कहलाता है। वाक्य पदक्रम में पहले कर्ता,

कर्म और फिर क्रिया का प्रयोग किया जाता है। इनमें पदक्रम, प्रयोग और क्रिया रूप पर विशेष ध्यान दिया जाता है तभी वाक्य शुद्ध और सरल बनते है, जैसे–

(i) पिता जी बाजार से सामान लाए।

(ii) मुझे संगीत बहुत पसंद है।

उपर्युक्त वाक्यों से अर्थपूर्ण रूप से स्पष्ट है। अतः ये शुद्ध वाक्य हैं। परंतु कभी-कभी लिंग, वचन, कारक, अव्यय तथा वर्तनी के अशुद्ध प्रयोग के कारक वाक्य अशुद्ध बन जाते हैं, जिनका अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता।

क्रियाकलाप

- (क) रोहन पेड़ पर गिर गया। — कारक संबंधी
  (ख) विदयार्थी मैदान में आ रही हैं। — लिंग संबंधी
  (ग) दीपक की उजाला फैल गया। — कारक संबंधी
  (घ) सुमित, सुमित की पुस्तक पढ़ता है। — सर्वनाम संबंधी।

अध्याय 20
विराम चिह्न

आओ कुछ बताएँ

- (क) शब्द को संक्षिप्त में लिखने के लिए लाघव चिन्ह लगता है।
  (ख) प्रश्न पूछे जाने पर प्रश्न चिह्न (?) का प्रयोग किया जाता है।
  (ग) राजा-रानी।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (i)

उ०2. (क) (!) (ख) (“ ”) (ग) (,)
(घ) [{()}]

उ०3. (क) पूर्ण विराम (ख) अद्‌र्ध विराम
(ग) विसर्ग चिह्न (घ) योजक चिह्न
(ङ) निर्देशक चिह्न (च) लाघव चिह्न।

उ०4. (क) लेखन में विराम-चिह्न का महत्वपूर्ण स्थान है। विराम-चिह्नों का प्रयोग लेखक को अर्थपूर्ण और व्याकरणिक रूप से सही बनाने के लिए किया जाता है।
जैसे– रोको, मत जाने दो।
रोको मत, जाने दो।
यहाँ अल्प विराम के कारण दोनों वाक्य का अलग-अलग अर्थ निकल रहा है।

(ख) प्रश्नसूचक चिह्न वाक्य में प्रश्न पूछे जाने पर प्रयोग किया जाता है। यह वाक्य के अंत में लगाया जाता है।
उदाहरण– तुम स्कूल कब जाओगे?

(ग) उद्‌धरण चिह्न मुख्य रूप से दो प्रकार से लगाये जाते हैं–
(i) एकहरा उद्‌धरण-चिह्न (‘.....’)
(ii) दोहरा उद्‌धरण-चिह्न (“....”)

क्रियाकलाप

- भारत एक महान देश है। यहाँ अनेक धर्म, जाति, जनजाति तथा समुदायों के लोग निवास करते हैं। भारतीयों के खान-पान, वेशभूषा, रीति-रिवाज आदि में भी पर्याप्त भिन्नता है। सभी विभिन्नताओं के बाद भी हम सब एक हैं।

अध्याय 21
मुहावरे और लोकोक्तियाँ

आओ कुछ बताएँ

- (क) मुहावरे का अर्थ है– अभ्यास। जब कभी निरंतर प्रयोग व अभ्यास से कोई वाक्यांश विशेष अर्थ देने लगता है, मुहावरा कहलाता है।

  (ख) लोकोक्ति का अर्थ है– लोक+उक्ति अर्थात् संसार में प्रसिद्ध।
  उदाहरण– अंधों में काना राजा अर्थात मूर्खों में कम बुद्धिमान व्यक्ति को बुद्धिमान समझा जाता है।

आओ कुछ करें

उ०1. (क) (ii)

उ०2. (क) फूला न (ख) आँखों का तारा (ग) आग बबूला
(घ) आवाज

उ०3. (क) गंगा गए गंगादास, जमना गए जमनादास।
(ख) जिसकी उतर गई लोई, तो क्या करेगा कोई।
(ग) अंधे के हाथ बटेर लगना।
(घ) थोथा चना बाजे घना।

क्रियाकलाप

- (क) संप्रभु से शत्रुता
  भूषण ने सभी कर्मचारियों को समझाया कि जल में रहकर मगर से बैर नहीं किया जा सकता है।

  (ख) अचानक मनचाही वस्तु मिलना
  उमेश केवल दसवीं पास है और उसे बड़ी कम्पनी में नौकरी मिल गई, ये तो अंधे के हाथ बटेर लगना हो गया।

  (ग) अंग्रेज़ जानते थे कि घर का भेदी लंका ढाए, इसलिए उन्होंने भारतीय मौकापरस्त राजाओं का अपनी साम्राज्य नीति के विस्तार के लिए खूब प्रयोग किया।

(घ) बिल्कुल अनपढ़ होना

यह फार्म मोहन को दिखाने से कोई लाभ नहीं है, उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

(ङ) एक प्रयास से दो काम सिद्ध होना

शर्मा जी को दफ्तर के काम से दिल्ली तो जाना ही था, साथ ही वे अपने बेटे की शादी के निमंत्रण पत्र भी मित्रों को दे आए। इस प्रकार वे एक पंथ दो काज कर आए।

अध्याय 24
कहानी-लेखन

आओ कुछ करें

उ०1. (क) एक धोबी के पास एक कुत्ता तथा एक गधा था। एक दिन धोबी के घर में चोर घुस आए। गधे ने कुत्ते को भौंकने के लिए कहा परन्तु कुत्ते ने मना कर दिया। गधे ने सोचा कि मैं तो अपने स्वामी का नुकसान नहीं होने दे सकता सो गधे ने जोर-जोर से रेंकना शुरू कर दिया। उसकी आवाज से चोर तो भाग गए परन्तु धोबी की नींद खुल गई तथा उसे बेवक्त गधे के रेंकने पर गुस्सा आ गया। धोबी ने गधे की डंडे से पिटाई कर दी। अब गधे की समझ में आ गया कि जिसका काम उसी को साजे, कोई ओर करे तो डंडा बाजे।

(ख) नदी के किनारे जामुन का पेड़ था, उस पर एक बंदर रहता था। नदी के मगरमच्छ और बंदर में गहरी दोस्ती हो गई। बंदर पके मीठे जामुन पेड़ से तोड़कर मगरमच्छ को देता था और मगरमच्छ वही जामुन अपनी पत्नी को खिलाता था। एक दिन मगरमच्छ की पत्नी बंदर का दिल खाने की इच्छा व्यक्त करती है और उसे अपने साथ लाने का आदेश देती है, जब बंदर को वह अपनी पत्नी के समीप ले जाता है तो बंदर को उसकी पत्नी की इच्छा का पता चलता है तो बंदर को स्वयं को बचाने की एक तरकीब सूझती है। वह कहता है कि मेरा दिल तो पेड़ पर ही है इसलिए वह मगरमच्छ के साथ नदी के किनारे खड़े पेड़ से अपना दिल लाने के लिए कहता है। जैसे ही वह नदी पर आता है तो वह तुरंत पेड़ पर चढ़ जाता है और मगरमच्छ को उसके विश्वासघात के लिए फटकारता है।